International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(1): 90-91

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(1): 90-91
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-11-2019
Accepted: 27-12-2019

डॉ० सुशील कुमार चौधरी
स0 प्रा0 (राजनीति विज्ञान)
ज0ना0ब्र0आ0 संस्कृत महाविद्यालय,
लगमारामभद्रपुर, दरभंगा, बिहार,
भारत

Corresponding Author:
डॉ० सुशील कुमार चौधरी
स0 प्रा0 (राजनीति विज्ञान)
ज0ना0ब्र0आ0 संस्कृत महाविद्यालय,
लगमारामभद्रपुर, दरभंगा, बिहार,
भारत

रविन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षापरक विचारधाराएँ

डॉ० सुशील कुमार चौधरी

सारांशः
रविन्द्रनाथ टैगोर का दिल हमेशा मातृभूमि भारत माँ की सेवा से ओतप्रोत था। उनके अनुसार बच्चों के शरीर और मन के पूरे विकास के लिए खुली हवा और पेड़–पौधों की जरूरत है। इन बातों से कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि जब बच्चे का दिल ताजा हो, उसकी जानने की इच्छा सजीव हो, उसकी सब इन्द्रियाँ सतेज हो, इसी समय उसे खुले आकाश के नीचे प्रकृति की गोद में खेलने दो। इसके साथ ही, उनका उद्देश्य सत्यं शिवमं सुन्दरम् की साधना थी। परमानन्द की प्राप्ति ही मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

प्रस्तावनाः
भारत भूमि चिन्तकों, दार्शनिकों, विचारकों एवं महान विभूतियों की न केवल जन्मस्थली, अपितु कर्मभूमि भी रही है। ऐसी ही शिक्षा जगत के महान विभूति, मूर्धन्य कलाकार एवं विश्व भारती के संस्थापक कवीन्द्र रविन्द्रनाथ टैगोर थे। इनका जन्म 1861ई0 में कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर एक लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान एवं दार्शनिक व्यक्ति थे। श्री टैगोर की प्रारंभिक विद्याध्ययन की शुरूअता ओरिएण्टल सेमिनारी स्कूल से हुई उसके बाद नॉर्मल स्कूल भेजा गया।
इतना ही नहीं, इसके साथ ही उनके पिता उन्हें घर पर ही बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, चित्रकला के साथ ही संगीत आदि की भी शिक्षा देते थे। 12 वर्ष की उम्र में उनके यज्ञोपवीत संस्कार कर उनक पिताजी भ्रमण पर चले गये। [1] सन् 1878 ई0 में अपने भाई के साथ इंगलैण्ड गये जहाँ इन्हें उन्हें बाइटन पब्लिक स्कूल में भर्ती किया गया, पर उन्हें पढ़ाई में मन नहीं लगा, सतत् वे अध्ययन के बदले अपने देश वापस लौटे, पुनः 1880ई0 में कानून पढ़ने इंगलैण्ड गये। जहाँ से, पढ़ाई छोड़कर वह वापस लौट आये। घर पर आने के बाद उनकी शादी कर घर–गृहस्थी में लगा दिया गया। लेकिन कुछ दिनों बाद पत्नी, पुत्री एवं छोटे पुत्र इस दुनिया से चल बसे। तत्पश्चात् उनके जिन्दगी में दुःख की शुरूआत हो गयी।
श्री टैगोर का दिल हमेशा मातृभूमि भारत माँ की सेवा से ओत–प्रोत था, उनका जन–गण–मन आज भी हमारे लिए पथप्रदर्शक है। अंग्रेजी शासन के क्रूर स्वभाव से वे अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त सर की उपाधि वापस लौटा दिए और शान्ति निकेतन में काम करते हुए काव्य रचना में संलग्न हो गये। इसी क्रम में उन्होंने गीतांजली की रचना की, जिसकी प्रशंसा सम्पूर्ण देश में होने लगी। ये भारत के प्रथम व्यक्ति थे जिन्हें 1913ई0 में नोवेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डी0 लिट की उपाधि प्रदान की गई। इनके महान व्यक्तित्व का परिचय देते हुए विद्वानों ने कहा है कि रविबाबू केवल कल्पना लोक में विचरनेवाले स्वप्नद्रष्टा कवि ही नहीं, अपितु महान विचारक और गहन तत्त्ववेत्ता थे। [2]
शिक्षा विषय से सम्बन्धित उनके विचार। भारतीय शिक्षा के दोष से भली–भाँति परिचित थे, इसलिए उन्होंने अपने अध्ययन काल में ही एक लेख लिखा था, जिसमें उम्र के साथ–साथ अनुभव तथा परिपक्वता के कारण वे शिक्षा में विशेष बदलाव करना चाहते थे। उनका विचार था कि भारतवासियों को ऐसी शिक्षा दी जाय, जो उनका शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार से विकास हो, जिससे उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण उन्नति सम्भव हो, प्रचलित शिक्षा के दोषों की आलोचना करते हुए उनका कहना था कि वह अपना उद्देश्य पूरा करने में सफल नहीं हो सकती है।
जहाँ तक बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध का प्रश्न है? इस सम्बन्ध में वे स्पष्ट रूप से कहे कि–''बच्चों के शरीर और मन के पूरे विकास के लिए, खुले आकाश, खुली हवा और पेड़–पौधों की जरूरत है। इन बातों से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि जब बच्चे का दिल ताजा हो, उसकी जानने की इच्छा सजीव हो, उसकी सब इन्द्रियाँ सतेज हो, इसी समय उसे खुले आकाश के नीचे प्रकृति की गोद में खेलने दो।'' [3]

संक्षेप में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार को हम इस प्रकार दिखला सकते है–

आध्यात्मिक शिक्षाः– उन्होंने तत्कालीन शिक्षा–व्यवस्था के सम्बन्ध में महसूस किया कि उसमें बालक के आध्यात्मिक विकास की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया है। शिक्षण–संस्थानों में बालकों की मानसिक भूख मिटाने के लिए पर्याप्त भोजन दिया जा रहा है, पर उनकी आध्यात्मिक भूख की ओर थोड़ा भी ध्यान नहीं दिया गया। जबकि टैगोर ने शिक्षा में आध्यात्मिक तत्वों के सम्मिश्रण पर काफी बल दिया। वे चाहते थे कि बालकों की शिक्षा ऐसी हो जो आध्यात्मवाद की ओर अग्रसर करने का अवसर प्रदान कर सके।

धार्मिक शिक्षाः– एक सफल सामाजिक प्राणी के रूप में जीने के लिए बालकों को ऐसी शिक्षा दी जाय, जिससे उसमें धर्म का अंश पर्याप्त हो। वे धर्म संकुचित अर्थ को नहीं अपनाते थे। वे हिन्दू–मुस्लिम, सिख–इसाई आदि के भेदभाव को बिलकुल नकार देते थे। वे सबों को मानवमात्र समझते थे। उनके अनुसार सच्चा धर्म वही है जो सभी तरह की विषमताओं से ऊपर उठकर मानव जाति का कल्याण करने में तत्पर हो। वे बालकों को ऐसी शिक्षा देना चाहते थे, जो उनके भीतर उच्च कोटि की धार्मिक भावना जागृत कर सके और वे मानवता का कल्याण कर सके।

सांस्कृतिक शिक्षाः– टैगोर भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सच्चे पुजारी थे। वे पाश्चात्य सभ्यता के चकाचौंध में न किसी प्रकार पड़ना चाहते थे और नहीं समझना चाहते थे। उन्होंने स्वयं लिखे हैः– चमक–दमक से युक्त अंग्रेजी सभ्यता के सामने हमारी भारतीय सभ्यता कहीं अधिक श्रेष्ठ है। इसको अपनाकर हम संसार में अपने खोये हुए प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। [4] उनके अनुसार शिक्षालयों में बालकों को प्राचीन भारतीय संस्कृति की शिक्षा अवश्य दिया जाना चाहिए।

ललित कलाओं की शिक्षाः– उनका विचार था कि शिक्षण–संस्थानों में बालकों को मानसिक भूख तो मिटती है, लेकिन उसके हृदय की ओर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता। इसलिए हम उसे विभिन्न कलाओं की शिक्षा उन्हें दे, जिससे वे आदर्श नागरिक बन सकें। क्योंकि हमें पढ़े–लिखें हृदयहीन विद्वानों की आवश्यकता नहीं है। उनके सम्बन्ध में एक विदुषी का कथन है किः–

Ravindra Nath Tagore laoneknew the real vallue ofeducation through thea rts NAD fuilt upa centrewere every boy NAD girl grew up inanatmosphere ofexquisite Indian culture.

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि का कथन है– ''सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है'' [6] ठीक यही विचार श्री टैगोर का था कि बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे उनके अन्दर सहानुभूति की भावना जगे। वही शिक्षा बालकों के अन्दर मानवीय गुणों को उत्पन्न करने में सक्षम होगा। सहानुभूति से व्यक्ति में पर दुःखकातरता, सहिष्णुता एवं परोपकारिता गुणों का समावेश उनमें हो सकेगा। श्रीमद्भागवत में भी कहा गया है कि–

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनम् द्वयम्।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्।। [7]

उन्होंने माई स्कूल रचना में लिखा हैः–

विद्यालयों में सहानुभूति की शिक्षा की व्यवस्थित रूप से उपेक्षा ही नहीं की जाती है वरन् उसका कठोरतापूर्वक दमन भी किया जाता है। हम भूगोल की शिक्षा देने के लिए मिट्टी से दूर हटाते हैं, जीवविज्ञान की शिक्षा देने के लिए जीवों की प्रजाति से दूर हटाते हैं, व्याकरण की शिक्षा देने के लिए उससे उसकी भाषा को छीनते हैं। बालक का स्वभाव अपनी पूर्ण ताकत से इस अत्याचार का विरोध करता है परन्तु अन्त में दण्ड के भय से चुप हो जाता है। [8]

प्राकृतिक वातावरणः– रवीन्द्रनाथ टैगोर भी रूसो और फ्रोवेल की तरह बालक को प्रकृति के समीप ही रखकर शिक्षा देना चाहते थे। उनके अनुसार बालक को प्राकृतिक वातावरण से दूर चहारदिवारियों में उन्हें शिक्षा देना उसके साथ अन्याय है। मानव और प्रकृति में घनिष्ठ सम्बन्ध है इसलिए प्रकृति से दूर रखकर बालक को उचित शिक्षा देना सम्भव नहीं है। उनके बारे में कहा है कि–

Tagoreshared a deep feeling for nature with Rousseau and Frobel but easily excalled them in the profoundity of his communion with nature and his understanding of the education implication of such communion. [9]

स्वतंत्रताः–टैगोर बालक को स्वतंत्र रूप से शिक्षा देना चाहते थे। उनका माननाा था कि बालकों को स्वतंत्रता दी जाय तो वह भविष्य में अपने को पूर्णतयामुक्त नहीं समझेगा। स्वतंत्र रूप से अपने विचार रखने की क्षमता जागृत उनमें नहीं होगी। अतः बालकों को स्वतंत्र वातावरण में शिक्षा देनी चाहिए, जिससे उनकी सभी प्रवृत्तियों का अच्छा विकास हो और उनमें आत्मविश्वास की भावना जगेः–

Faith is the find that feels the light. And sings when the dawn is still dark. [10]

सत्यं शिवं सुन्दरम्ः–उनका उद्देश्य सत्यं शिवमं सुन्दरम् की साधना थी। परमानन्द की प्राप्ति ही मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है, ऐसा वे मानते थे। इस विचारधारा का प्रभाव उनके शिक्षा–विषयक विवादों पर भी दिखायी पड़ता है। उन्होंने लिखा है– हमें प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में बैठकर पढ़ना–पढ़ाना चाहिए, इसके लिए अधिक भौतिक सुविधाओं को जुटाना मूर्खता है।

देशप्रेम की शिक्षाः–

उनका विचार था कि शिक्षा ऐसी हो कि जिससे उसमें देशप्रेम की भावना जगे। देश के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपना सर्वस्व न्योछावर करने में तत्पर हरे। उन्होंने स्वयं लिखा–

"I shall be born in India and again and again with allher poverty misery and wretehedned Ilove India best". [11]

निष्कर्षः–

इस प्रकार हम कह सकते है। कि आज के इस चकाचौंध रंगीन दुनिया में जीनेवाले तथा अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को कविवर रवीन्द्रनाथ की शिक्षा–नीति की ओर ध्यान देने की जरूरत है, जिससे हम अपने देश के लिए भी कुछ सोचें तथा अपनी सोच से दूसरों को प्रभावित कर उनमें भी देशप्रेम की भावना को जगावें।

संदर्भ सूचीः

1. भारतीय शिक्षा दर्शन, पृ0–122
2. लक्ष्मीलाल के0 अड़े–शिक्षा पत्रिका, जुलाई–1957
3. रवीन्द्रनाथ टैगोर–1963 आश्रम में।
4. तथैव
5. Rukmini Devi Arundale Ravindra Nath Tagore.A century volume 1861-1962-Sahitya Academy.
6. मैथिलीशरण गुप्त
7. वेदव्यास रचित श्रीमद्भागवत्
8. श्रीजौहरी उद्धृत भारत में शिक्षा
9. Sunil Chandra Sarkar, Ravindra Nath Tagore. A century volume 1861-1961-Sahitya Academy, p. 245.
10. Ravindra Nath Tagore, himself true poet- Hiren Mukherjee.
11. तथैव